International Journal of Applied Research 2016; 2(3): 817-819

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(3): 817-819
www.allresearchjournal.com
Received: 17-01-2016
Accepted: 20-02-2016

शीतल कुमारी
पूर्व गवेषिका, विश्वविद्यालय मैथिल विभाग, ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
शीतल कुमारी
पूर्व गवेषिका, विश्वविद्यालय मैथिल विभाग, ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

मैथिली अनुवाद साहित्यकः मर्मज्ञ अनुवादक 'अमरजी'

शीतल कुमारी

सारांशः
अनुवादेक माध्यमसँ लोक एक भाषाक गप दोसर भाषामे बुझैत अछि, मुदा अनुवाद भाषाक नहि भावक होयबाक चाही। हमसब जनैत छी जे कोनहुँ भाषा साहित्यक विकासमे अनुवादक एकटा पैघ योगदान होइत अछि। आ मैथिली साहित्यमे सेहो ई बात सटीक बैसैत अछि। मैथिली मे एहि कार्यक शुभारम्भ कैलनि चन्दा झा। विद्यपतिक पुरुष परीक्षा कऽ अनुवाद कऽ एकर बाद पत्र–पत्रिकाक प्रकाशन भेलासँ अनूदित साहित्य सेहो प्रचूर मात्रामे छपय लागल। पहिने तँ संस्कृते सँ– उपनिषद, पुराण, धर्मशास्त्र प्रभृति पर आधारित भेल। संस्कृतक किछु नाटकोक अनुवाद भेल जाहिमे बाबू क्षेमधारी सिंह 'शकुन्तला' क मैथिली अनुवाद 1918 ई0 मे कैलनि जे तत्कालीन मैथिली गद्यक उत्कृष्ट उदाहरण थिक। ओकर बाद बंगला साहित्य सँ अनुवाद भेल जाहिमे – बंकिमचन्द्र, शदचन्द्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदिक लेख आ कथाक अनुवाद भेल। हिन्दीसँ सेहो किछु कथा सभक अनुवाद भेल जाहिमे शशिनाथ झा द्वारा 'कलिधर्म प्रकाशिका' अछि।

प्रस्तावना
अनुवादक तीनटा प्रकारमानल जाइत अछि– शास्त्रीय अनुवाद, व्यवहारिक अनुवाद आ साहित्यिक अनुवाद। एहि मे व्यवहारिक अनुवादकें सर्वप्रथम स्थान देल गेल अछि। शास्त्रीय आ व्यवहारिक अनुवादमे मुख्यतः भाव, अर्थात Intended Meaning आ अर्थ अर्थात Surface Meaning यैह दुनू पकडबक प्रयोजन होइत छैक। साहित्यक अनुवादमे भूलक अभिव्यंजना सेहो सुरक्षित रखवाक अपरिहार्यता रहैत छैक। अभिव्यजनाकें पकड़बाक हेतु विद्वता नहि भावुकता चाही। एहि अभिव्यंजनामूलक विशिष्टताके देखैत विभिन्न साहित्यिक अनुवादकें अनुवाद नहि कहि Transcription Recreation पुनः सर्जन प्रतिरूपण आदि नाना विध नाम दैत छथि।
एकटा सफल अनुवादककें तीन क्षेत्रमे प्रवीनता रहबाक चाही मूल भाषामे प्रवीणता, लक्ष्य–भाषामे प्रवीनता आ अनुद्य सामग्रीक विषय क्षेत्रमे प्रवीनता। अनुवादक परिभाषा एना देल जा सकैत अछि। एक भाषा मे लिखल वा कहल विषयकें दोसर भाषामे रूपान्तरित करब अनुवाद भेल। अनुवादक सम्बन्धमे डॉ0 रामदेव झाक कथन छनि – ''अनुवादक महत्त्वक सम्बन्धमे आब बौद्धिक जगतमे कोनो शंका नहि रहि गेल अछि। सामान्यतः लोक एक या दुई भाषा बजैत–बुझैत अछि। क्वचित–कदाचित लोक बहुभाषाविज्ञ होइत अछि। जकरा अपवादे मानल जा सकैत अछि। सामान्य लोक अपन मातृभाषा अथवा दू एक सीखल भाषाक साहित्यिक अवगाहन करबामे समर्थ भऽ सकैत अछि विश्व बड़ विशाल अछि आ बहुतो भाषा सब अत्यन्त समृद्ध अछि। ओहि सबमे ज्ञान–विज्ञान विषयक एवं कालजयी साहित्यिक कृति सभक सृष्टि भेल अछि आ भऽ रहल अछि। ओकर सभक परिचय लाभ ओ आस्वादन अनुवादहिक माध्यम सँ यूरोपीय बौद्धिक जगत, प्राचीन भारतीय वाङमय–वेद, पुरान, उनिषद साहित्यसँ परिचय भेल छल। सतरहम शताब्दीमे दाराशिकोह संस्कृतक पचास गोट उपनिषद फारसीमे अनुवाद करबौने छलाह। एहि अनुवादक अनुवाद लैटिन भाषामे एकटा फ्रेंच विद्वान ऑके व्वील दुयेरॉं कयलनि। ई अनुवाद यद्यपि खूब समीचीन नहि छल, तथापि एकरहि अध्ययन कऽमहान जर्मन दार्शनिक शीपेनहोवर उदृगार व्यक्त कयने छलाह ''उपनिषद मानव – मस्तिष्क सर्वोच्च एवं सम्पूर्ण रचना थिक आ हमरा जीवन मे एहि ग्रन्थसँ यथार्थ शान्ति भेटल।'' [1]
अनुवादक सम्बन्धमे डॉ. दुर्गानाथझा 'श्रीश मैथिली साहित्यक इतिहासमे लिखैत छथि– अनुवादक एहि प्रक्रियामे अंग्रेजी साहित्यसँ समय–समय पर अनुवाद भेल, जकर संख्या अधिक नहि अछि, मुदा जाहिसँ मैथिली गद्यक अभिव्यक्तिमे बड़ नवीनता आयल अछि तथाकतेक नव–नव शब्दक प्रयोग आरम्भ भेल जे पूर्वमे नहि होइत छल यथा सन्धिकाल, 'स्वभाव ओ वातावरण', 'कल्पनाशील साहित्य' आदि। एहि प्रकारक नव शब्दक आगम बंगलाक अनुवादसँ भेल अछि तथा एहिसँ मैथिली भाषामे नवीन प्रकारक ओ अभिव्यक्ति कौशलक दर्शन होइत अछि। अंग्रेजी सँ जाहि कृतिक अनुवाद भेल अछि ताहिमे 'बिना भूतक छाया, चोर सलोमा प्रभृति नाटकक अतिरिक्त श्री केदारनाथ झाक 'वेकफिल्डक पादरी एवं अवसिनियाक राजकुमार रसेलस, स्व० जलेश्वर सिंहक

'शेक्सपियरक नाट्यकथा', श्री उमानाथ झाक चौपेकक 'मदर' श्री रमानन्द ठाकुर ओ वैद्यनाथ चौधरीक 'इसपरक नीतिकथा, श्यामानन्द सिंहक गुड अर्थक 'जीवन भूमि' प्रभृति प्रमुख अछि। परंच एहन अनुवाद पुस्तकाकार कमे प्रकाशित भए सकल अछि।'' [2] उपर्युक्त अनुवादक कड़ीमे मैथिली साहित्यमे एकटा नाम आरो जोडल जा सकैत अछि ओ छथि पं० श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'। ई मैथिलीमे चारिटा पुस्तकक अनुवाद कऽ सफल अनुवादकक श्रेणीमे परिगणित होइत छथि। हिनका द्वारा अनुदित पोथी सभ अछि– विद्यापति नीति तरंगिणी (1973), हरिनारायण आप्टे (1985) बंकिम चन्द्र चटर्जी (1990) परशुरामक बीछल बेरायल कथा (1995) एकर अतिरिक्त हिनक अनुदित कृति सब कतोक पत्र–पत्रिकामे छिड़िआयल अछि।

विद्यापति नीति तरंगिणीः

प्रस्तुत पुस्तक विद्यापति रचित पुरुषपरीक्षाक नीतिपरक श्लोकक गद्य–पद्यमय अनुवाद थिक। एहिमे लेखक विद्यापतिक पुरुषपरीक्षाक 164 गोट श्लोकक अनुवाद कैलनि। एकर बहुतो कथावस्तु लोक कथा रूप ग्रहण कऽ लेने अछि आ जे एकर गद्यमे तँ सरल अनुवाद छैक सगहि पद्यमे सेहो अनुवाद कैल गेल अछि। एहि पोथीक प्रस्तुत श्लोकके देखल जा सकैत अछि–

''वीरः सुधीः सविधश्चपुरुष पुरूषार्थवान्।
तदन्ये पुरूषाकाराः पशवः पुव्छवर्जित।।''

वीर, बुधियार, विद्वान तथा पुरूषार्थी जे छथि से पुरुष थिकाह, एहिसँ अतिरिक्त पुरुषके पुरूषक आकार मात्र रखनिहार बिनु नाङडिक पशुए बुझबाक चाही।

''वीर, सुधि, विद्यासँ शोभित पुरूषाथीयिक पुरूष प्रमाण।
बिनु नाङडिक पुरूषे आकारक पशुए थिक चारू सँ आन।'' [3]

ई पुस्तक पुरूषे सभक लेल नहि अपितु नेना–भुटकाक लेल सेहो ज्ञानवर्द्धक अछि। एहि पुस्तकक अवलोकन कयलासँ नेना लोकनिक जीवन यात्राक पथमे आलोक आबि सकैत अछि। एहि पुस्तकक प्रकाशन 1973 ई० मे भेल, मुदा आइयो ओहिना नवीन अछि।

सामान्यतः देखल जाइत अछि जे गद्यानुवादक तुलनामे पद्यानुवाद बेसी कठिन होइत अछि। पद्यमे शब्देक चमत्कारक महत्त्व छैक आ तें पद्य संस्कृतक होए तँ आरो अलौकिक भऽ जाइत अछि। अमरजी सेहो संस्कृतक विद्वान छथि आ मातृभाषा मैथिलीक सेहो। तें बहुतो श्लोक सभक जे अनुवाद कयलनि अछि से मूल सँ बेसीए सरल ओ बोधगम्य अछि।

द्रष्टव्य अछि –

''आत्मद्यातं गृहत्यागं धनहानि सुहृद वधम्
ज्ञान–लोपकरः पुसां कोपः कायरते न किम्।।''

अपन आत्महत्या, घरक परित्याग, मित्रक वध आ ज्ञानक हरण कयनिहार क्रोध मनुष्यसँ की की नहि करा लैत छैक? अर्थात क्रोधमे लोक सब किछु कऽ बैसैत अछि।

मित्रक वध, धनहानि कराबय आत्मघात पुनि घरहुक त्याग।
की की नहि करबैथ पुरूषसँ क्रोध, खसाबय माथक पाग।।[4]

एहि तरहें हम देखैत छी जे अनुवादक विद्यापतिक काव्यक जे सुकमारता छनि तकरा अक्षुण्य रखबामे पूर्णतः सफल भेलाह अछि।

हरिनारायण आप्टेः

दोसर हिनक अनुवादक पुस्तक छनि हरिनारायण आप्टे। ई पुस्तक रामचन्द्र भिकाजी जोशीक अंग्रेजी मोनोग्राफक सफल अनुवाद थिक। ई पुस्तक भारतीय साहित्यक निर्माताक क्रममे 1985 ई० मे प्रकाशित भेल।

ई पोथी चारि भाग मे बॉटल गेल अछि – व्यक्तित्व आ परिवेश, हरिभाउ आप्तेसँ पहिलुक मराठी उपन्यास, हरिभाव आप्तेक सामाजिक उपन्यास, हरिभाव आप्टेक उपन्यास ऐतिहासिक, अन्यान्य रचना आ निष्कर्ष। हरिनारायण आप्टे आधुनिक मराठी साहित्यक सशक्त साहित्यकार छथि। आ हुनक जीवन एहिमे प्रस्तुत कैल गेल अछि।

पहिल भाग व्यक्ति आ परिवेशमे हरिनारायण आप्टेक जन्म, परिवार, परिवेश परिवारक आर्थिक स्थिति, छात्र जीवन शिक्षक लोकनिसँ सम्पर्क, मित्र वर्ग, देश कालक स्थिति, वैवाहिक जीवन सन्तान आदिक सम्बन्धमे लिखलनि अछि।

दोसर भाग हरिभाव आप्टेसँ पहिलुक मराठी उपन्ययास एहिमे मराठी साहित्यमे उपन्यासक आरम्भ, आरम्भक उपनयासकार जेना–लक्ष्मणशास्त्री हल्बेक मुक्तिमाला (1861), एन०एस० रिस्तुद रचित– मंजुघोष (1867), बाबा पद्मनजी रचित यमुना पर्यटन (1857), विनायक कोददेवओक रचित शिरस्तेदर (1881), मोचनगद जकर रचियता छथि आर० बी० गँजिकर (1871), आदिक चर्चा कयलनि अछि।

पाँचम भाग अछि अन्यान्य रचना आ निष्कर्ष। एहिमे कहल गेल अछि जे हरिभाव एकैस गोट उपन्यासक अतिरिक्त आन–आन विधामे सेहो लिखलनि। सब रचना आ भाषणकें मिलाय दू हजान पृष्ठ भऽ सकैत अछि। हिनक अन्य स्फुट रचना स्फुट गोष्ठी नामसँ चारि खण्डमे प्रकाशित छनि जाहिमे बीस गोट कथा, आठ गोट लेख, बारह गोट जीवनी आ एकैस गोट जीवन अछि। हुनक बिभिन्न प्रकारक रचना आ भाषण सबमे 1911 मे मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालयमे कैल गेल भाषण, 1912 मे अकोलामे कैल गेल अध्यक्षीय भाषण आ शेक्सपीयरक नाटक सभक अनुवादक हुनका द्वारा कैल गेल आलोचना मराठी–साहित्य समीक्षा आ साहित्य समस्या सभक विचार विमर्शक इतिहासमे युग प्रवर्तक मानल जाइत अछि।'' [5]

बंकिम चन्द्र चट्जी :

इहो पुस्तक अंग्रेजीसँ अनुवाद कैल गेल अछि। एकर प्रकाशन 1990 मे साहित्य अकादमिक भारतीय साहित्यक निर्माता कड़ीमे भेल। एकर मूल लेखक सुबोध चन्द्र सेनगुप्त छथि। बंकिम चन्द्र चटर्जी बंगला साहित्यक प्रख्यात साहित्यकार छथि। आ एहि पोथीमे हिनके जीवनी ओ साहित्यसँ परिचय कराओल गेल अछि। पुरोवाक आ भूमिकाक अतिरिक्त एहि पुस्तककें नओ शीर्षकक अन्तर्गत बाँटल गेल अछि जे एहि प्रकारें अछि– प्रारम्भिक उपन्यास, मध्यकालीन उपन्यास, अन्तिम अवधिक उपन्यास, साहित्यक समालोचना, विविध रचना, वन्देमातरम् (1876–1976) इत्यादि ई गीत वन्देमातरम् बंकिम चन्द्रक कृति छनि।

बंकिमचन्द्र चटर्जीक सम्बन्धमे एहि पुस्तकमे आरम्भमे सुबोधचन्द्र सेनगुप्त लिखैत छथि – साहित्यमे बंकिम चन्द्र गद्य रचनाकऽ मात्र उपन्यास ओ कथे नहि लिखलनि, यद्यपि ओ हुनक लेखनीसँ ओहिना निःसृत भेलनि जेना यूनानी देवता जीवक माय सँ मिनर्वाक आविर्भाव भेल छलनि– प्रत्युत अपन उपन्यास, निबन्धक माध्यमसँ, जे अधिकतर हुनक अपने पत्रिका बंगदर्शनमे प्रकाशित भेल छलनि, साहित्यिक आस्वादन एवं मूल्यांकन तथा सर्जनात्मक लेखनक मानदण्ड सेहो स्थापित कैलनि।

साहित्यक समालोचना एहि शीर्षक अंतर्गत बंकिम चन्द्रक सबसँ प्रसिद्ध उपन्यास 'आनन्दमठ (1882) आ देवी चौधुरानी (1984) कऽ चर्चा कैल गेल अछि। हिनक एकटा आरो उपन्यास सीतारामक उल्लेख भेल अछि। एकर प्रकाशन 1887 ई० मे भेल छल। एहि सम्बन्धमे लिखिल गेल अछि जे– ''आनन्द मठ (1882) पुनः अपन सामग्रीक हेतु इतिहास दिस मुड़ि गेलाह, परन्तु ताहिमे ओ ततेक परिवर्तन आ ततेक परिबर्द्धन कयलनि जे ओ अपना पाठकके

चेतौलनि जे ओ लोकनि एहि सबकें ऐतिहासिक उपन्यास नहि मानि लेथु। जे सब एहन साधारण औपन्यासिक कृति सेहो नहि थिक जकर लक्ष्य मात्र खिस्सा कहि देब रहैत छै। अथवा चरित्र चित्रण कऽ देब मात्र। ओ सब वैचारिक उपन्यास थिक।[6]

'साहित्यिक समालोचना' एहि शीर्षकक अंतर्गत बंकिमचन्द्रक सम्पूर्ण साहित्यक समीक्षा कैल गेल अछि। एकर अतिरिक्त 'वंन्देमातरम्' शीर्षकक अंतर्गत वन्देमातरमक महत्ता दर्शाबैत अछि। द्रष्टव्य अछि– ''वन्देमातरम बंकिमचन्द्र द्वारा संस्कृत–बंगाली मिश्रित भाषामे रचल गेल अछि। जे भारतीय संस्कृतिक अनुपम निधि थिक।[7]

परशुरामक बीछल–बेरायल कथाः

श्री अमरजीक चारिम अनुदित पोथी अछि 'परशुरामक बीछल बेरायल कथा'। ई बंगालक प्रसिद्ध कथाकार राजशेखर बसुक बंगला कथाक मैथिली अनुवाद थिक। राजशेखर बसु बंगालमे परशुरामक नामसँ प्रसिद्ध छलाह तें एक रनाम परशुरामक बीछल बेरायल कथा पड़ल। एकर प्रकाशन 1995 ई० मे भेल आ 1998 ई० मे साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत कैल गेल। एहि पुस्तकमे कुल बारहगोट कथा अछि जे एहि प्रकारें अछि – (1) श्री श्री सिद्धेश्वर लिमिटेड, (2) मुशंडीक मैदानमे, (3) बिरंचि बाभु, (4) उनटा पुरान, (5) हनुमानक स्वप्न, (6) चिरंजीव, (7) भारतक झुनझुना, (8) रटन्ती कुमार, (9) शाकाहारी बाघ, (10) वरनारी वरण, (11) जयहरिक जेब्रा (12) चिट्ठीबाजी।

एहि पुस्तकमे ठाम–ठाम मैथिली शब्दक प्रयोग प्रचूरतामे भेल अछि। जेना– ढाही लरब, लदगोबरि, पेटमधवा, साढ़े नौ, माहुर, नेना–भुटका, भरने नदी, कनिया–पुतरा, धुमधुमा देब, थकुचि कऽ राखब, अकछि जायब, अओन पओन, पीने बुत, आस्थापात गोबी जमा लेब इत्यादि। पुरस्कार– प्रशस्तिमे अनुवादक विशिष्टताकें रेखांकित करैत कहल गेल अछि जे –

''राजशेखर बसु'' कऽ बीछल बाङला कथा सभक श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' द्वारा कैल गेल मैथिली अनुवाद 'परशुरामक बीछल बेरायल कथा' मे मूल कथाक आत्मा सुरक्षित अछि। एहि उत्कृष्ट अनुवादमे बाङ्ला प्रयोगक अर्थत्छवि ओ ओकर आस्वादके बनाओल राखल गेल अछि। मैथिली अनुवादमे एकरा भारतीय कथा साहित्यक एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानल गेल अछि।''[8]

निष्कर्षः

ई कहल जा सकैत अछि जे जहिना कविता, कथा, उपन्यासमे हिनका प्रसिद्धि भेटल छनि तहिना अनुवादहुमे ई निपुण छथि। हिनका द्वारा कैल गेल अनुवाद एतेक उत्कृष्ट अछि जे मैथिलीक मौलिक साहित्यक अनुरूप लगैत अछि। ई प्रत्येक पुस्तकमे ओकर मूल भाव ओ शैलीके तथावत रखलनि अछि। हरिनारायण आप्टे हो अथवा बंकिमचन्द्र चटर्जी, हिनक पोथी पढ़लासँ एना बुझाइत अछि जेना मैथिलीक कोनो साहित्यकारक विनिबन्ध पढ़ि रहल छी। ई दुनू पुस्तकक मूल अंग्रेजी अछि। अमरजी संस्कृतक विद्वान छथि आ मातृभाषा छनि मैथिली। मुदा हिनका अंग्रजीओक ओतबे ज्ञान छनि। अनुवादक अपने हास्य व्यग्यक साहित्यकार छथि तें 'परशुरामक बीछल बेरायल कथामे' ठाम–ठाम हास्य–व्यंग्य झलकैत अछि।

निःसन्देह कहल जा सकैत अछि जे अमरजीक एहि अनुवाद कार्यसँ मैथिली अनुवाद साहित्य समृद्ध भेल अछि।

संन्दर्भ–निर्देशः

1. अनुवाद ओ मैथिली, रामदेव झा, स्मारिका, 1995–96, मिथिला सास्कृतिक परिषद, बोकारो।
2. मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, परिवद्धित नवीन संस्करण, 1991, पृ०– 2354।
3. विद्यापति नीति तरंगिणी, श्री चन्दनाथ मिश्र 'अमर', नवरत्न गोष्ठि 1973, पृ०–9
4. श्री अमर अर्चना, सं०, मदनेश्वर मिश्र, श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अभिनन्दन ग्रन्थ समिति, दरभंगा, 2001, पृ०–279
5. हरिनारायण आप्टे अनु०– श्रीचन्दनाथ मिश्र 'अमर', साहित्य अकादेमी, दिल्ली, 1985 पृ०–81
6. बंकिमचन्द्र चटर्जी, अनु० श्री चन्दनाथ मिश्र 'अमर', साहित्य अकादेमी, दिल्ली, 1990, पृ०– 45
7. तथैव, पृ०– 63
8. श्री अमर अर्चना, पृ०– 40